



Ancient Vedic Mantras and Rituals





Shrimad Bhagavad Gita Chapter-2 Shalok-63 |
श्रीमद् भगवद्गीता अध्याय दो-श्लोक तिरसठ | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग
श्लोक 63

क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति ॥ 63॥
सरल हिंदी में भावार्थ

हे अर्जुन!

क्रोध से मनुष्य में मोह (भ्रम) उत्पन्न होता है, मोह से स्मृति भ्रमित हो जाती है, स्मृति के नष्ट होने से बुद्धि का नाश हो जाता है, और बुद्धि के नाश होने पर मनुष्य का पतन हो जाता है।

विस्तृत व्याख्या

इस श्लोक में श्रीकृष्ण मनुष्य के पतन की पूरी प्रक्रिया को समझाते हैं।

क्रोध से उत्पन्न मोह

कृष्ण बताते हैं कि जब मनुष्य क्रोध में आ जाता है, तो उसकी सोचने-समझने की शक्ति कमजोर हो जाती है।

क्रोध व्यक्ति को सही और गलत का अंतर समझने नहीं देता, जिससे वह भ्रम (मोह) में पड़ जाता है।



मोह से स्मृति का भ्रम

जब व्यक्ति मोह में होता है, तो उसकी स्मृति यानी सही ज्ञान और अनुभव कमजोर पड़ जाते हैं।

वह अपने मूल सिद्धांतों और जीवन के सही मार्ग को भूलने लगता है।

स्मृति से बुद्धि का नाश

जब स्मृति नष्ट हो जाती है, तो व्यक्ति की बुद्धि (निर्णय लेने की क्षमता) भी नष्ट हो जाती है। वह गलत निर्णय लेने लगता है और अपने जीवन को नुकसान पहुंचाता है।

बुद्धि के नाश से पतन

कृष्ण कहते हैं कि जब बुद्धि ही नष्ट हो जाए, तो व्यक्ति का पूर्ण पतन निश्चित है।

वह न केवल आध्यात्मिक रूप से, बल्कि सांसारिक जीवन में भी असफल हो जाता है।

मुख्य बिंदु

- क्रोध मनुष्य के पतन की शुरुआत है
- क्रोध से भ्रम और मोह उत्पन्न होता है
- मोह से स्मृति और ज्ञान कमजोर होता है
- स्मृति के नाश से बुद्धि नष्ट होती है
- बुद्धि के नाश से जीवन में पतन होता है



गूढ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक हमें चेतावनी देता है कि क्रोध एक ऐसी भावना है जो धीरे-धीरे मनुष्य को अंदर से कमजोर कर देती है। यह केवल एक भावना नहीं, बल्कि पतन की पूरी श्रृंखला की शुरुआत है।

कृष्ण का संदेश है कि यदि व्यक्ति अपने मन और क्रोध पर नियंत्रण रखे, तो वह इस पतन से बच सकता है और सही मार्ग पर बना र

RELATED ARTICLE



[Chapter-2 Shalok-62](#)



[Chapter-2 Shalok-61](#)



THANKS FOR READING



READ MORE RELIGIOUS
CONTENT ON



vedicprayers.com

